8

क्रूस पर चढ़ाया जाना

मत्ती 27:31-54; मरकुस 15:20-39; लूका 23:26-47; यूहन्ना 19:17-30

''परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया; हमारी ही शान्ति के लिये उस पर ताड़ना पड़ी कि उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो जाएं'' (यशायाह 53:5)।

किसी भी भाषा में ''क्रूस'' शब्द से बेहतर कोई शब्द नहीं है। हमें कांपते दिलों के साथ क्रूस के अध्ययन की कोशिश करनी चाहिए। जो इसके द्वारा बचाए गए हैं, उनके लिए यह उम्रभर का अध्ययन होना चाहिए।

क्रूस पर चढ़ाया जाना! कितना निर्दयता भरा, क्रूरतापूर्ण, बेहरमीभरा और अमानवीय है। इसकी खोज फारसियों द्वारा की गई और बाद में रोमियों ने सिरे चढ़ाया।

लोगों को क्रूस पर चढ़ाने के लिए रोम बदनाम हो गया था। मृत्यु दण्ड का यह ढंग अपमान का चरम था। रोम में रोमियों को क्रूस पर नहीं चढ़ाया जाता था। यहूदी लोग क्रूस पर चढ़ाए जाने को तुच्छ समझते थे (व्यवस्थाविवरण 21:23; गलातियों 3:13) अर्थात वे कभी इसे व्यवहार में नहीं लाते थे। आज जानवरों के साथ वही वैहिशयाना बर्ताव किया जाता है, जो यीशु के साथ किया गया था।

आधुनिक सम्भयता क्रूस पर चढ़ाए जाने को गलत बाताती है, पर लेकिन संसार के अधिकतर हिस्सों में मृत्यु दण्ड दिया जाता है। जहां मृत्यु दण्ड दिया जाता है वहां आमतौर पर जल्दी वाला, दर्द रहित और जितना हो सके मावनीय ढंग अपनाया जाता है।

कोड़े मारना! रोमियों द्वारा मृत्यु दण्ड दिए जाने से पहले कोड़े मारने का कानून था। यीशु ने भविष्यवाणी की थी कि उसके दु:खों के सम्बन्ध में कोड़े मारे जाएंगे (मत्ती 20:17-19; मरकुस 10:32-34; लूका 18:31-34) और उसे मारे भी गए!

कोड़े मारना बहुत ही वैहशी ढंग था। इससे शरीर पर बड़े-बड़े निशान बन जाते थे, ज़ख़्म हो जाते थे और शरीर पर सोज़िश आ जाती थी। आमतौर पर आखों और दांतों पर वार किए जाते थे। कई लोग तो इससे ही मर जाते थे, पर कोड़े मारना आदमी को मारने के लिए नहीं होता था। कोड़े सज़ा देने के लिए मारे जाते थे और कील मार डालने के लिए ठोंके जाते थे। सख्त दिल, तजुर्बेकार रोमी सिपाहियों को पता होता था कि कब रुकना है। यह कोड़े क्रूस पर चढ़ाए जाने की तकलीफ को बढ़ा देते थे।

पिलातुस ने इस आशा से कि कोड़ों से छलनी और लहूलुहान यीशु को देखकर भीड़ के मन में

उसके प्रति हमदर्दी पैदा होगी, उसे कोड़े मरवाए थे (मत्ती 27:26; मरकुस 15:15; यूहन्ना 19:1)। उसने कहा, ''देखो, यह पुरुष!'' (यूहन्ना 19:5)। पिलातुस की चाल काम नहीं आई न तो यीशु को और न पिलातुस को कोई सहानुभूति मिली।

मृत्यु! क्रूस दिए जाने से लोगों की मनुष्यता का पर्दा हट जाता था। मूल रूप में क्रूस चढ़ाने का इस्तेमाल व्यक्ति को तिल-तिल करके मारने के लिए होता था। लोगों में उस व्यक्ति को नग्न (सब बातों में), लाचार और गाली-गलौज के लिए खुला छोड़ दिया जाता था। इतना कष्ट उठाने के बावजूद लोग कई-कई दिन तक जीवित रह सकते थे। कई दो-तीन दिन तक जीवित रह जाते थे। कितना मर्मस्पर्शी दृश्य है! बहुत कम ऐसा होता था, जिसमें अधिक लहू न बहता हो। कोई बड़ा अंग प्रभावित नहीं होता था। व्यक्ति को सांस लेने के लिए अपनी टांगें खींचनी पड़ती थी, जिससे कीलों का कष्ट बढ़ जाता था। मृत्यु आमतौर पर लहू के कम दबाव और ऑक्सीजन न मिलने के कारण होती थी। टांगें तोड़े जाने पर क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले की मृत्यु कुछ ही पलों में हो जाती थी।

''सताव भरा'' के लिए अंग्रेजी शब्द ''excruciating'' का मूल अर्थ है ''क्रूस से बाहर।'' क्रूस पर हिलने-जुलने से कष्ट बढ़ जाता था। क्रूस पर आरामदायक स्थिति कोई नहीं थी। दर्द असहनीय होता था। सिरदर्द, गला सूखने वाली प्यास, मांसपेशियों तथा नसों की अकड़न से शरीर में कई झटके लगते रहते थे।

घाव! किसी को पांच तरह से घायल किया जा सकता है। यीशु ने पांचों प्रकार के घाव सहे। (1) चोट के घावों में घूसों और कुंद हथियारों से मार होती थी (मत्ती 26:67; मरकुस 14:65; लूका 22:63)। (2) चीरने के घाव चाबुक से पड़ते थे। (3) गहरे घाव रोमी सिपाहियों द्वारा उसके सिर पर ठोंके गए कांटों के तीखे ताज के सिर में जड़ने से हुए थे (मत्ती 27:29)। (4) छिदरी घाव तब हुआ जब ''उन्होंने [उसके] हाथ और [उसके] पैर छेदे'' (भजन संहिता 22:16)। हाथ शरीर का बोझ नहीं सह पा रहे थे। कील कलाई में लगे थे, जो हाथ का भाग है। (5) एक सिपाही द्वारा यीशु की पसली में भाला मारने से चीरा देकर किए गए घाव से पक्का हो गया कि यीशु मर चुका है (यूहन्ना 19:34)।

रोमी सिपाही यह सुनिश्चित किए बिना कि क्रूस पर चढ़ा व्यक्ति मर चुका है, वहां से जाते नहीं थे। बाइबल यह साफ ऐलान करती है कि यीशु क्रस पर मरा।

यीशु द्वारा सही गई पीड़ा और कष्ट पर अधिक बल नहीं दिया गया है। वचन में जहां तक हो सके घिनौनी बातों से परहेज रखा गया है। पापी उसकी पीड़ा से नहीं बल्कि उसकी मृत्यु से बचाए जाते हैं। क्रूस खामोश मृत्यु था, जिसके ऊपर चढ़ने वालों में चीखने की शक्ति या दम नहीं होता था। कोड़े मारे जाने को ''छोटी मृत्यु'' और क्रूस दिए जाने को ''बड़ी मृत्यु'' कहा जाता था।

यशायाह 53 अध्याय बड़े ध्यान से पढ़ें। क्रूस की पीड़ा से अपने मन को बिना अहसास के न रहने दें। इस भयभीत करने वाले सदमे को अपने ऊपर हावी न होने दें।

क्रूस ...
और मार्ग ही नहीं है!